International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के प्रमुख भारतीय प्रशंसक : एक अध्ययन

सिराज खान
शिवाजी नगर, वार्ड गुलाब कालोनी,
सागर (म.प्र.)

शोध सारांश :–

भारत में होम्योपैथी होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति को लाने का श्रेय जॉन मार्टिन होनिंगबर्गर को दिया जाता है एवं भारत में होम्योपैथी का विकास एवं होम्योपैथी को चरम पर पहुँचाने का श्रेय बाबू राजेंद्र दत्त एवं महेन्द्र लाल सरकार को जाता है लेकिन इनके पश्चात् होम्योपैथी को भारत में अन्य क्षेत्रों में फैलाने का श्रेय होम्योपैथी चिकित्सकों को जाता है जैसे माहन दास करम चंद्र गांधी, ईष्वरचंद विद्यासागर, डॉ.रविन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद, राजेन्द्र प्रसाद (प्रथम राष्ट्रपति), डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन (पूर्व राष्ट्रपति), सरदार वल्लभ भाई पटैल, जय प्रकाष नारायण (पूर्व स्वास्थ्य मंत्री), सी. सी. विष्वास (कानून मंत्री), अषोक कमार वालिया (पूर्व स्वास्थ्य मंत्री), श्री के. आर. नारायणन (पूर्व राष्ट्रपति), मदर टेरेसा और अशोक कुमार।

मुख्य बिंदु– होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति, प्रशंसक, मोहन दास करम चंद गांधी, ईष्वरचंद विद्यासागर, डॉ. रविन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद, राजेन्द्र प्रसाद।

प्रस्तावना

भारत में एक ऐसी चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा दिया गया जो सस्ती एवं स्वस्थ्यवर्धक थी, जिसे होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति कहतें हैं। भारत में होम्योपैथी चिकित्सकों के अलावा होम्योपैथिक चिकित्सा के कुछ प्रशंसकों द्वारा होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के विकाश के लिए कार्य एवं अपने अपने मत प्रस्तुत किये, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं.

मोहन दास करम चंद गांधी (1869 ई. –1948 ई.) :

गांधी जी को पूरी दुनिया भर में महात्मा गांधी के नाम से जाना जाने लगा, जिसका मतलब महान आत्मा होता है। जो कि रविन्द्रनाथ टैगोर के द्वारा पहली बार इस्तेमाल किया गया, और भारत में बापू (फादर) के नाम से इन्हें लोग जानने लगे। इन्हे कानूनी तौर पर राष्ट्र पिता की उपाधि मिली, इनका जन्म 2 अक्टूबर को हुआ, उस दिन से इनका जन्म दिन गांधी जयंती के रूप मे मनाया जाने लगा और इस दिन राष्ट्रीय अवकाष होता है, और पूरी दुनिया में इस दिन को अंतर्राष्ट्रीय अंहिसा के रूप में पूरे दुनिया में मनाया जाता है।

सन् 1915 ई. में भारत लौटने के बाद इन्होने गरीबों, किसानों, गांव के मजदूरों से मिलकर एक आंदोलन छेड़ा जिसमें ये सबसे ज्यादा भूमि कर के खिलाफ थे।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

जब इन्हे सन् 1921 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नेता बनाया गया, तब उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर गरीबी कम करने, महिलाओं के हक को बढ़ाने, छुआछूत को मिटाने के लिए मुहीम छेड़ी।[1]

गांधी जी होम्योपैथी की तरफ आकर्षित मोतीलाल नेहरू एवं चितरंजन दास के कारण हुए। प्रांरभ में गांधी जी को होम्योपैथी पर ज्यादा भरोसा नहीं था पर बाद में वे भरोसा करने लगे, गांधी जी होम्योपैथी के साथ–साथ एलोपैथी से भी इलाज करवाते थे। होम्योपैथी के बारे में गांधी जी ने कहा है कि :– होम्योपैथी किसी और पद्धति से कहीं ज्यादा तौर पर लोगों के सफल इलाज करती है। होम्योपैथी एक नई पद्धति है जो मरीज का किफायती और अहिंसात्मक तौर पर इलाज करती है।[2]

स्वर्गीय डॉ. हैनीमैन एक बहुत बुद्धिजीवी व्यक्ति थे जिन्होंने लोगों की जान बचाने में काफी सहयोग प्रदान किया। इनके इस माननीय कार्य के लिए आज भी हैनीमैन को याद करते है, किंतु उनके जो विरोधी हैं वो होम्योपैथी के सिद्धांत एवं उपचार का विरोध करते हैं। जो मरीज थे जिनका इलाज होम्योपैथी के द्वारा हो सकता था उनका इलाज होम्योपैथी के विरोधियों के कारण नहीं हो पाया, इसमें कोई संदेह नहीं है कि होम्योपैथी एक सुरक्षित, किफायती और एक सबसे पूर्ण चिकित्सा विज्ञान है।

गांधी जी ने सबको होम्योपैथी पर भरोसा करना सिखाया[3], गांधी जी से होम्योपैथी के कई कार्यों[4] एवं डिस्पेन्सरीज को सहयोग प्रदान किया।[5] गांधी जी ने अपना ही नहीं बल्कि अपने बच्चों का भी इलाज डॉ.राजपाल से सलाह लेकर करवाया, गांधी जी ने शंकर महाराज को गरीबों और भूमिहीनों की मदद के लिए भेजा, जहां उन्होंने अपने चार साल, होम्योपैथी के अभ्यास और स्कूल चलाने में व्यतीत किए।

गांधी जी ने लोगों को होम्योपैथी षिक्षा ग्रहण करने के लिए भी कहा, वे होम्योपैथी चिकित्सकों के घर गए और होम्योपैथी क्लीनिक बंगाल में खोलने के लिए व्यवस्था करने लगे और गरीबों को पूरे भारत वर्ष में मुफ्त इलाज देने के प्रयास में लगे रहे।

गांधी जी ने एनीवुड बेसेन्ट का भी समर्थन किया, जो कि रिचर्ड, स्टेफुड, क्रिप्स के मित्र थे, गांधी जी सत्याग्रह के पथ प्रदर्षक थे, और वे अन्याय के खिलाफ थे, और उन्होंने अहिंसा एवं पूर्णतः अंहिसा की खोज की, जिसके चलते भारत को आजादी और जन अधिकार आंदोलन को दुनिया भर में फैलाया।

ईश्वरचंद विद्यासागर (1820 ई. –1891 ई.) :

बंगाल के ईष्वरचंद विद्यासागर एक महान बुद्धिजीवी थे जो कि संस्कृत के छात्र, षिक्षक, सुधारक एवं परोपकारी व्यक्ति थे। इनका जन्म बंगाल के बनर्जी परिवार में मिदनापुर जिले के बिरसिंगा में हुआ था। जब ये माइग्रेन से पीड़ित थे तो इनका इलाज कलकत्ता के डॉ. बाबू राजेन्द्र दत्त ने होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के द्वारा किया, डॉ. बाबू राजेन्द्र दत्त एक उच्च कुल के व्यक्ति थे उन्होंने होम्योपैथी की पढ़ाई जर्मन एवं फ्रेन्च से की इन्होंने हैनीमैन के सिद्धांतो को अपनाया।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

विद्यासागर होम्योपैथी से बहुत प्रभावित हुए और अपने भाई इसान चंद्र को भी इसके प्रभाव के बारे मे बताया और इसे सीखने को कहा ताकि वे गांव के गरीबों का इलाज कर सकें। ये मानते थे कि समाज सुधार के कार्य में जो गरीब, लाचार बीमार लोगों का इलाज सस्ते तौर पर उपलब्ध हो सके। और सस्ता इलाज होम्योपैथी थी।

इसान चंद्र ने अपने भाई के इस कार्य को करने में सहयोग प्रदान किया एवं होम्योपैथी को फैलाने में मदद की इंसान चंद्र की मृत्यु 1903 ई. में हुई।[6]

नोबल पुरूस्कृत डॉ.रविन्द्रनाथ टैगोर :

डॉ.रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर विचार – होम्योपैथी कोई थोड़ी बहुत दवाईयों का एकत्रीकरण नहीं है बल्कि यह नया विज्ञान है जिसमें कई बुद्धिमानी दार्षनिकों के विचार शामिल है।

स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद के अनुसार होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर विचार –एलोपैथी ने कॉलरा से पीड़ित मरीजों का इलाज किया और अपनी दवाएं दी। होम्योपैथी ने अपनी दवाएं दी और एलोपैथी से कही ज्यादा लोगों का इलाज किया क्योंकि होम्योपैथी मरीजों को हानि नहीं पहुंचाती बल्कि प्रकृति को स्वयं ही मरीजों को ठीक करने का मौका देती है।

राजेन्द्र प्रसाद (प्रथम राष्ट्रपति) :

राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर विचार – मैं मानता हूं होम्योपैथी एक ऐसी पद्धति है जिसका कार्यक्षेत्र भारत जैसे गरीब देष में बहुत ज्यादा है जिसे जोष दिलाना पड़ेगा।

डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन (पूर्व राष्ट्रपति) :

डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर विचार – होम्योपैथी केवल बीमारियों का इलाज नहीं करती बल्कि बीमारी को पूरे मानव जगत के ऊपर एक समस्या को लेकर इलाज करती है। होम्योपैथी ने एक जनस्वास्थ्य के लिए अहम् किरदार निभाया। चिकित्सा सुविधाओं की कमी के कारण भारत में होम्योपैथी आराम से बढ़ सकती है।

सरदार वल्लभ भाई पटैल :

सरदार वल्लभ भाई पटैल के अनुसार होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर विचार – होम्योपैथी ने एक चमत्कारी और अद्भुत कार्य किया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

जय प्रकाश नारायण (पूर्व स्वास्थ्य मंत्री) :

जय प्रकाष नारायण के अनुसार होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर विचार – होम्योपैथी ने अद्भुत सफलताएं प्राप्त की। इसका किफायती होना, साधारणता इसके ये गुण इसे और महान बनाता है। ये कोई चौकाने वाली बात नहीं है कि इसके असरकारक गुण भी इसे और ऊपर ले जाते है।

सी. सी. विश्वास (कानून मंत्री) :

सी. सी. विष्वास के अनुसार होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर विचार – अगर कोई वैज्ञानिक पद्धति चिकित्सा में है तो वो होम्योपैथी में है जिसके कई वैज्ञानिक आधार है, और हैनीमैन ने भी बहुत बड़ा योगदान इस चिकित्सा विज्ञान में दिया है।

अशोक कुमार वालिया (पूर्व स्वास्थ्य मंत्री) :

अषोक कुमार वालिया के अनुसार होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर विचार – होम्योपैथी ने साधारण, किफायती, असरकार इलाज प्रदान किया है इससे (भारत) के कई समाज के लोगों द्वारा स्वीकार किया गया।

श्री के.आर.नारायणन (पूर्व राष्ट्रपति) :

श्री के.आर.नारायणन के अनुसार होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर विचार – होम्योपैथी इलाज मेरे लिए नहीं बल्कि मेरे पूरे परिवार की पहली पसंद है। होम्योपैथी को पूर्णतः भारतीय चिकित्सा प्रणाली में विकसित होना चाहिए। ज्यादा से ज्यादा खोज और विकास होम्योपैथी को और ज्यादा प्रसिद्ध और उपयोगी बनाने के लिए जरूरी है।

मदर टेरेसा (1910 ई.–1997 ई.) :

एक चिकित्सक जिन्होंने मदर टेरेसा के साथ समीपता से 1945 ई. से लेकर 1988 ई. तक काम किया उनकी एक प्रतिवेदन के अनुसार मदर टेरेसा 'होम्योपैथी के द्वारा इलाज करना, गरीबों की परेषानियां मुख्यतः भारत में दूर करने के लिए एक बेहतर पद्धति है, और पूरी दुनिया भर में भी यह एक सरल असर कारक और कम खर्चे वाला इलाज है।' ऐसा मदर टेरेसा का मानना था।[7]

अशोक कुमार :

अशोक कुमार का जन्म 13 अक्टूबर, 1911 ई. को बिहार के भागलपुर जिले में हुआ। पिता और चाचा मध्यप्रदेश के खण्डवा जिले में रहते थे।

कलकत्ता से सपने लिए हुए अषोक कुमार बंबई आए थे, वो सपने जर्मनी जाकर एक टेक्नोलॉजी में बेहतरीन नाम कमाने के थे। बंबई को तो वे पड़ाव के तौर पर इस्तेमाल करने वाले थे। इलाहबाद विष्वविघालय से बी.एस.सी. करने के बाद उन्होंने कलकत्ता से कानून की पढ़ाई जरूर की, लेकिन मन की उड़ान की मंजिल कुछ और ही थी। वेा वकील भी नहीं बनना चाहते थे। परिवार में पहले से कई वकील थे। एक्टर भी नहीं बनना

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

चाहते थे, क्योंकि एक्टर्स को उस जमाने में अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता था। उस समय के एक्टर न तो बहुत पढ़े–लिखे होते थे और न बहुत सांस्कारिक। और अषोक कुमार तो सांस्कारिक बंगाल परिवार से ताल्लुक रखते थे और साथ पढ़े–लिखे भी थे।

विलक्षण प्रतिभा के जिस कदर धनी वह थे, वैसा शायद ही बॉलीवुड में कोइ दूसरा हो। बेहतरीन होम्योपैथी डॉक्टर, शानदार पेंटर, जबर्दस्त एस्ट्रोलॉजर और इलेक्ट्रॉनिक का गजब का ज्ञान। क्या आपने किसी सुपरस्टार या एक्टर में इतनी ढेर सारी खासियतें देखी है, लेकिन अपने दादामुनि में ये सब था। होम्योपैथी उनका पंसदीदा शगल था। वह बैंगलोर में एक जर्मन डॉक्टर से टकरा गए, वहां वो अपनी पत्नी का फेफड़ो का इलाज कराने गए थे। होम्योपैथी के इस डॉक्टर ने उन्हें कुछ दवाएं दी, जिसने कुछ दिनों में ही असर दिखाना शुरू कर दिया। अषोक कुमार ने डॉक्टर से होम्योपैथी सिखाने को कहा। डॉक्टर ने उनके पहले एनाटॉमी और फिजियोलॉजी पढ़ने के लिए कहा। दो हफ्ते में ही उन्होंने उसे पढ़ डाला। फिर डॉक्टर के पास पहुंचे। डॉक्टर उनकी कोषिषों से इतना प्रभावित हुआ कि उसनें उन्हें और किताबें दी। बाद में अषोक कुमार ने उन्हीं डॉक्टर के नौकर को साथ लेकर प्रैक्टिस भी शुरू की। उन्होंने विधिवत होम्योपैथ की डिग्री ली और डॉक्टर अषोक कुमार बन गए।

बाद में बरसों में जब अषोक कुमार ने फिल्मों में काम करना लगभग बंद कर दिया था, तब वो नियमित रूप से होम्योपैथी की प्रैक्टिस में रम गए। उनकी क्लीनिक में खासी भीड़ लगती थी। वह खुषी–खुषी सबका इलाज करते थे। उनकी बेटी भारती जाफी याद करती हैं कि पिता ने तमाम रोगियों का इलाज किया, उनके पास कैंसर के रोगी भी आते थे।[8]

भारती एक वाक्या बताती है कि अषोक कुमार के पास 14 साल की एक ऐसी लड़की का केस आया, जिसे पोलियो और गैंग्रीन था। सर्जन ने उसके प्रभावित पैर का हिस्सा काटने के लिए कह दिया था। ये आषंका भी थी कि शायद ऑपरेषन के बाद वो लड़की नहीं बचे। ये वाकई मुष्किल केस था। लड़की का पिता अषोक कुमार के पास आया, उसे उम्मीद थी कि वो जरूर उसका इलाज कर सकेंगे। अषोक कुमार ने उसे चार दवाईयां दी। तीन दिन के अंदर उस लड़की का पैर का कालापन दूर होना शुरू हो गया। अषोक ने फिर रिस्क लेते हुए ऑपरेषन से एक दिन पहले उसे अस्पताल से रिलीज करा लिया। डॉक्टर ने चेतावनी दी, लेकिन उन्होंने उसकी परवाह नहीं की, अगले छह महीनों में उन्होंने उस लड़की का पोलियो और गैग्रीन दोनों ठीक कर दिए।

इसी तरह अषोक कुमार के पास सत्तर साल की एक महिला आई। वह कैंसर से ग्रस्त थी। असहनीय दर्द होता था। दादामुनि ने उसका इलाज किया। कुछ महीनों बाद वह एकदम भली–चंगी हो गई। उसनें आभार जताते हुए अस्पताल की स्वैच्छिक सेवा करनी शुरू की। एकाएक एक दिन उसे फिर दर्द उठा और तुरंत उसकी मौत भी हो गई। अषोक कुमार बड़े हैरान हुए कि जब वह औरत भली–चंगी हो गई थी तो अचानक फिर उसके

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

साथ ऐसा कैसे हो गया। उन्होंने ब्रिटेन मे हाम्योपैथी के बड़े इंस्टीट्यूट को सारे विवरण और अपने इलाज के तौर–तरीकों के साथ खत लिखा। जवाब आया कि आपके इलाज में कहीं खोट नहीं थी। आपने बेषक अपने इलाज से उसे ठीक कर दिया था, लेकिन कुछ बातें भगवान पर छोड़ देनी चाहिए। अषोक कुमार का तर्क था कि अगर सब कुछ भगवान पर छोड़ना है तो फिर इलाज करने की क्या जरूरत। फिर उन्हें समझाया गया कि इलाज करना डॉक्टर का धर्म होता है और इस धर्म का निर्वाह उसे करना ही चाहिए। हकीकत ये है कि बहुत सी बातें उसके वष में नहीं होतीं। बात अषोक कुमार की समझ में आ गई।

आम लोगों और गरीबों का इलाज वो बिल्कुल मुफ्त में करते थे। फिल्मी दुनिया के भी बहुत से लोग उनके पास इलाज के लिए आते थे। उन्होंने मीना कुमारी का इलाज किया थो, लेकिन मीना कुमारी ने जब परहेज करना छोड़ दिया तो दादामुनि ने उनका इलाज करना भो छोड़ दिया। इसी तरह मनोज कुमार पेट के रोग से त्रस्त थे। ऑपरेषन की नौबत आ गई थी। लंदन जाने की तैयारी कर रहे थे। उन्हें किसी ने सलाह दी कि अषोक कुमार को दिखा लो जरूर ठीक हो जाओंगे। दादामुनि ने कुछ दवाओं और पथ्या द्वारा उनका इलाज किया, वह बगर ऑपरेषन के ठीक हो गए। उनके नाती व बंबई के टॉप फैषन फोटोग्राफर राहुल पटेल कहते है, 'नाना के पास बंबई ही नहीं बाहर से भी लोग इलाज के लिए आते थे। पूरे घर में होम्योपैथी की दवाएं बिखरी होती थी।' मृत्यु–10 दिसम्बर, 2001 को इनकी मृत्यु हुई।[9]

सारांश

भारत में होम्योपैथी चिकित्सकों द्वारा नवीन चिकित्सा पद्धति की अलख जलाई गई एवं एक ऐसी चिकित्सा पद्धति को भारत में बढ़ावा दिया गया जो सस्ती एवं स्वस्थ्यवर्धक थी, इस चिकित्सा पद्धति को भारत में लाने का श्रेय मोहन दास करम चंद गांधी, पडित ईष्वरचंद विद्यासागर डॉ.रविन्द्रनाथ टैगोर स्वामी विवेकानंद, पंडित ईष्वरचंद विद्यासागर, डॉ.रविन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद, राजेन्द्र प्रसाद, डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन (पूर्व राष्ट्रपति), सरदार वल्लभ भाई पटैल, जय प्रकाष नारायण (पूर्व स्वास्थ्य मंत्री), के. आर.नारायणन, सी. सी. विष्वास (कानून मंत्री), अषोक कुमार वालिया (पूर्व स्वास्थ्य मंत्री), मदर टेरेसा, अशोक कुमार ने ने होम्योपैथी के प्रति अपना अमूल्य विचार व्यक्त किए और ये महान पुरुष अपने जीवन में इस चिकित्सा पद्धति अपनाया और इसके विकाश में महत्वपूर्ण योगदान दिए।

होम्योपैथी उपचार की एक आधुनिक और संषोधित प्रक्रिया है जो कि बहुत ही किफायती एवं अहिंसात्मक है। सरकार को इसे बढ़ावा देना चाहिए एवं राष्ट्र में इसे चारो तरफ फैलाना चाहिए।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

संदर्भ ग्रंथ

- http://sueyonghistories.com/archives2009/07/26Mohandas-Karamchand Gandhi, 2013, P.1-

2- Dana Ullman, The Homeopathic Revolution: why famous people and cultural Heroes choose Homeopathy. (North Atlantic Books, 2007) multiple pages, from Quota http //sueyonghistories.com/ archives /2009/07/26.

3- Mahatma Gandhi, Teachings of Mahatma Gandhi, Indian Printing works, 1947, P. 399, qouted from.

4- Mahatma Gandhi, collected works, volume 65, publications division ministry of information and Broadcasting Government of India 1976.

5- Gandhi Smarak Nidhi, In memory of Mahatma Gandhi: 27 years of Gandhi Smarak Nidhi, Gandhi Smarak Nidhi, 1976, P. 54, Quoted from.

6- http://www.phhrfingdia.org/index.php/aboutpbhry, 2013, pp.-1.

7- http://www.phhrfingdia.org/index.php/aboutpbhry, 2013, pp.-1.

8. वही, पृ.–78–79.

9. श्रीवास्तव, संजय, अहा जिन्दगी, दैनिक भास्कर समूह की प्रस्तुती, जयपुर, सितम्बर–2013, पृ.–7.7